Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 12, Issue No. 2, January-2017, ISSN 2230-7540

मॉरीशस में भारतीय संस्कृति साहित्य के दर्पण में

Dr. Desh Raj*

Assistant Professor (Hindi) Guru Har Krishan Educational Board, Rayatkhana, Karnal

----------X----------

भारत की मिठास को संजोकर रखने वाला देश है मॉरिशस। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम न होकर समूची संस्कृति को स्पष्ट करने का दर्पण भी होती है। भाषा न केवल विचारों के आदान–प्रदान का साधन है, बल्कि वह सम्पूर्ण परंपरा की संवाहक भी होती है। भाषा देश के इतिहास एवम् वर्तमान का वह आईना होती है जिसमें भविष्य भी देखा जा सकता है।

भारत बहुभाषी देश है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक हिन्दी को राजभाषा से लेकर हिन्दी के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने और उनका विकास करने से है। जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। हिन्दी को 14 सितम्बर 1949 को राजभाषा घोषित किया गया। इसलिए प्रत्येक वर्ष हिन्दी दिवस मनाया जाता है। भारत के प्रयासों से आज हिन्दी दिवस भारत ही नहीं, विश्व के अन्य देशों में भी मनाया जाता है। जैसे कि – मॉरिशस, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रिका, ऑस्ट्रेलिया आदि। हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विश्व हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आयोजन भी विदेशों में होता रहा है।

सन् 1975 में प्रथम अधिवेशन नागपुर (भारत) में हुआ परन्तु इसके अध्यक्ष शिवसागर राम गुलाम (मॉरिशस के तत्कालीन राष्ट्रपति) थे और दूसरा तथा चौथा विश्व हिन्दी सम्मेलन 28–30 अगस्त 1976 और 2–4 दिसम्बर 1993 को मॉरिशस की राजधानी (पोर्टलुई) में हुए। इसके अतिरिक्त ट्रिनिडाड, ब्रिटेन, सूरीनाम, अमेरिका और 2012 दक्षिण अफ्रीका में विश्व हिन्दी सम्मेलन सम्पन्न हुए। परिणामस्वरूप भारत के बाद मॉरिशस ही वह देश है, जहाँ सबसे अधिक हिन्दी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

स्वतंत्रतापूर्व :

स्वतंत्रतापूर्व काल में मॉरिशस में हिन्दी भाषा का इतिहास रहा है। जो कि लगभग डेढ़ सौ वर्षों का है। भोजपुरी बोली का हिन्दी भाषा को विकसित करने में भी तो विशेष योगदान रहा है। इग्लैंड के अधिपत्य से पहले विश्व के कई अन्य देशों का भी मॉरिशस पर साम्राज्य रहा है ।परन्तु इस परतंत्रता के बीच भी मॉरिशस की जनता में हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति की झलक देखने को मिलती रही है।

भारतीय अप्रवासियों ने अपनी भाषा तथा संस्कृति की शिक्षा को ही अपने बच्चों के उद्धार का उचित मार्ग माना है। सन् 1901 में महात्मा गाँधी जी की प्रेरणा से ही भारतीय अप्रवासियों ने अपने बच्चों को शिक्षा तथा राजनीति के क्षेत्र में अग्रसर करा पाए। 17वीं – 18वीं शती में आए मजदूरों की पीढ़ियों ने धर्म, भाषा, पहनावा तथा रहन–सहन भारतीय–परम्परा के अनुसार ही रखा। जो कि मॉरिशस में भारतीय संस्कृति – साहित्य के दर्पण में संजोकर रखने वाली चित्रात्मक शैली थी।

स्वातंत्रयोत्तर काल :

स्वतंत्रता का नशा अलग ही होता है और वह भी जो वर्षों पुरानी परतंत्रता रूपी बेड़ियों को तोड़ने से मिला हो। आजादी तो पंछियों को भी पसन्द है, वह भी परतन्त्रता नहीं चाहते और मानव के लिए तो आजादी का महत्व ही कुछ और है। आखिरकार 12 मार्च सन् 1968 को मॉरिशस को इग्लैंड़ के आधिपत्य से मुक्ति मिल गई। अब मॉरिशस एक स्वतंत्र देश है। स्वाधीनता राष्ट्र के नागरिकों के दिलों में नवोल्लास फूटा। स्वतंत्रता के बाद भोजपुरी मॉरिशस की मातृ भाषा होते हुए भी हिन्दी भाषा और हिन्दी संस्कृति को एक नई जागृति आई। मॉरिशस की हिन्दी कविता पर विचार करते हुए मुनीश्वर लाल चिन्तामणि लिखते हैं : ''सन् 1968 में मॉरिशस की हिन्दी कविता स्वतंत्रता के वातावरण में फल–फूल रही है। स्वतंत्रता अपने साथ बेकारी और निर्धनता की समस्याऐं लाई। आर्थिक और सामाजिक स्वाधीनता के लिए कविता की संघर्ष चेतना को काव्य में स्थान मिला।''

पत्र–पत्रिकाओं व मीडिया का योगदान :

मॉरिशस में हिन्दी पत्रकारिता की शुरूआत डाक्टर मणिलाल के हिन्दुस्तानी पत्र से हुई। पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से ही कोई भी देश अपनी भाषा और अपने साहित्य, संस्कृति को विकसित कर सकता है। मॉरिशस में हिन्दी प्रकाशन के प्रभाव के बावजूद भी उन्होनें भारतीय संस्कृति और हिन्दी साहित्य की जिजीविषा को नहीं छोड़ा। अभिमन्यु अनंत द्वारा त्रैमासिक पत्रिका 'वसन्त' तथा प्रहलाद रामशरण द्वारा संपादित इन्द्रधनुष, अजामिल माताबदल

द्वारा सम्पादित 'पंकज' आदि पत्रिकाओं का भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आज मॉरिशस में भारतीय फिल्मी कलाकारों के माध्यम से रेड़ियो से लेकर टी.वी. तथा इंटरनेट और हिन्दी समाचार पत्रों के माध्यम से मनोरंजन, संस्कृति, धर्म, समाज शिक्षा आदि विषयों पर हिन्दी कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं जिसमें भारतीय बॉलिवुड़ का मुख्य स्थान है।

धार्मिक – सामाजिक संस्थाओं का योगदान :

मॉरिशस में स्वतंत्रता से पूर्व ही भारतीय धार्मिक, शैक्षिक तथा सामाजिक, साहित्यिक संस्थाएँ उभरकर सामने आई जिन्होनें हिन्दी का प्रचार – प्रसार जोर–जोर से किया। इनमें मुख्य संस्थाएँ आर्यसमाज संस्थान, सनातन धर्म, हिन्दी प्रचारिणी सभा, महात्मा गाँधी संस्थान, इन्दिरा गाँधी सांस्कृतिक केन्द्र, विश्व हिन्दी समाचार, विश्व हिन्दी पत्रिका आदि कार्यक्रमों के माध्यम से हिन्दी भाषा और संस्कृति को बढ़ावा दे रही थी। मॉरिशस में पिछले डेढ़ सौ वर्षों के इतिहास में जिस प्रकार से हिन्दी भाषा और संस्कृति ने प्रगति की है। उससे यह तो निश्चित है कि मॉरिशस भारतीय संस्कृति का आईना है।

साहित्यकारों का योगदान :

मॉरिशसीय साहित्य में हिन्दी में ही सबसे अधिक रचनाएँ उपलब्ध है जो कि भारतीय साहित्यकारों से प्रेरित रहा है। मॉरिशस के साहित्यकार भारतीय साहित्यकारों को ही अपना प्रेरणास्त्रोत मानते हैं। मॉरिशस के पहले कवि बजेन्द्र कुमार भगत (मधुकर) हैं जो कि मॉरिशस के राष्ट्र कवि हैं। 'मधुकर' ने मधुपर्क, मधुबन, मधुकरी, मधुकलश, मधुमास, गुंजन, रसवंती, हमारा देश। सोमदत्त बरवोरी की 'मुझे कुछ कहना है', 'बीच में बहती धारा, नशे की खोज, सांप भी सपेरा भी'। अभिमन्यु अनंत शबनम की 'कैकटस के दांत, नागफनी में उलझी सांसे, एक डायरी बयान। हरिनारायण सीता की प्रवासी स्वर प्रभात, चक्रव्यूह। पूजानन्द नेमा की आकाश गंगा, जो गैर हाजिर है, हेमराज सुंदर की चेतना, चुनौती, आक्रोश आदि । इन सभी साहित्यकारों ने भारतीय मिथक और इतिहास आदि को उद्घाटित किया है। इन रचनाकारों ने साहित्य को एक नया आयाम दिया जो कि भारतीय हिन्दी साहित्य की देन है।

आध्यात्मिक ग्रथों का योगदान :–

मॉरिशस में भारतीय धार्मिक ग्रन्थों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रवासी भारतीय जब मॉरिशस आए तो वे अपने साथ रामचरितमानस, हनुमान – चालीसा, रामायण और महाभारत व अन्य आध्यात्मिक ग्रन्थ भी लेकर आए। दिनभर मेहनत मजदूरी करने के बाद संध्या के समय ग्रन्थों का मिलकर पाठ करना उनका भावनात्मक संबल तो था ही साथ ही इन्हीं के माध्यम से मॉरिशस में हिन्दी भाषा का एक छोटा साथ पौधा रोपा गया था। आज भी मॉरिशस में रामचरित मानस व अन्य आध्यात्मिक ग्रन्थों का पाठ सार्वजनिक समूहों में बहुत श्रद्धापूर्ण किया जाता है।'' उपर्युक्त पंक्तियाँ भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने मॉरिशस के राष्ट्रीय दिवस पर मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त की थी। श्री मोदी जी ने मॉरिशस में हिन्दी प्रेमियों और हिन्दी संस्थाओं से जुड़े लोगों का आभार व्यक्त किया। जिन्होनें मॉरिशस में हिन्दी साहित्य और संस्कृति का प्रचार–प्रसार किया। जिनके योगदान से आज मॉरिशस में स्कूल, महाविद्यालय, विश्व हिन्दी सचिवालय, (हिन्दी स्पीकिंग यूनियन) रामायण केन्द्र आदि मुख्य हैं।

भारतीय गिरमिटियायों (मजदूरों) का योगदान :

मॉरिशस में 1834 में काम की तलाश में भारत से बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा कुछ दक्षिण भारतीय राज्यों से लोगों का तांता सा लग गया और आरंभ हुई अजनबी देश में काम की तलाश। जहाँ पर ये मजदूर इकट्ठे हुए उसे 'कुली घाट' के नाम से परन्तु अब अप्रवासी घाट के नाम से जाना जाता है। ये मजदूर ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान मुफत मजदूरी के रूप में लाए गए थे। इन्होनें वहाँ पर भारतीय किसान पद्धति से गन्ने की व अन्य फसलों को उगाया। आधुनिक मॉरिशस में आज इन्हीं मजदूरों के वंशज सफलता की ऊचाईयों छू रहे हैं और देश के उच्चपदों पर पर विराजमान हैं।

निष्कर्ष :–

भाषा का प्रश्न समग्र हैं, भाषा अनुभूति को अभिव्यक्त करने का माध्यम नहीं है बल्कि भाषा सभ्यता को संस्कारित करने वाली वीणा एवं संस्कृति को शब्द देने वाली वीणा है। निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि मॉरिशस में भारतीय संस्कृति व भाषा का दर्पण देखते ही बनता है। मॉरिशस में भारतीय जीवनशैली और हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने का श्रेय प्रमुख धार्मिक, सामाजिक संगठन संस्थाओं और साहित्यकारों को जाता है जिनके अभूतपूर्व योगदान के कारण आज हम मॉरिशस को भारतीय संस्कृति के अनुरूप मानते हैं। विश्व में भारत के अतिरिक्त कई देशों में साहित्यसृजन हो रहा है, परन्तु सृजनात्मकता साहित्य की जो प्राणवक्ता और जीवंतत्ता मॉरिशस के हिन्दी साहित्य में है, वह अन्य में दुर्लभ है। मॉरिशस को (हिन्द महासागर का मोती) कहा जाता है। क्योंकि मॉरिशस सागर की वादियों में घिरा हुआ देश है। मॉरिशस में हिन्दी लेखन की समृद्ध परम्परा रही है। जिससे भारतीय संस्कृति, सभ्यता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मॉरिशस में इसीलिए भारतीय संस्कृति साहित्य के आइनें में जाँचा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कर्ण राजशेषगिरि राव हिन्दी साहित्य और सामासिक संस्कृति।

जगदीश गुप्त, हिन्दी की सामासिक एवं सांस्कृतिक एकता।

डा0 लता – मॉरिशस का हिन्दी साहित्य।

ललित कुमार के (लेख के मुख्य अंश) 21–05–2012

शोभना जैन के (लेख के मुख्य अंश) 13–05–2012

सुनील विक्रम सिंह के (लेख के मुख्य अंश) 13–03–2015

Corresponding Author

Dr. Desh Raj*

Assistant Professor (Hindi) Guru Har Krishan Educational Board, Rayatkhana, Karnal

E-Mail – deshraj660@gmail.com